Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850

Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 10 | Nov - 2015

प्रवासी साहित्य में यथार्थवाद (तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों के संदर्भ में)

दीपिका घई
हिन्दी विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज गर्ल्ज़, यमुनानगर.

प्रस्तावना:

साहित्य समाज का दर्पण है, प्रत्येक युगीन साहित्य में हम तत्कालीन परिस्थितियों का अक्स देख सकते हैं । जो कुछ समाज में घटित होता है, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष वही साहित्य में चित्रित होता है । साहित्यकार एक सजग एवं संवेदनशील प्राणी है, समाज में जो कुछ घटित हो रहा ह या उसके आसपास के परिवेश में जो कुछ भी होता है वही साहित्यकार की लेखनी में कैद हो जाता है । प्राचीनकाल से ही साहित्य के मानदण्ड, मूल्य, परिवेश बदलते रहे हैं तो इस परिवर्तन का मूल कारण ही साहित्यकार का समाज और परिवेश से जुड़ा होना है । प्रत्येक साहित्य प्राय: दो

दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है - आदर्शवाद एवं यथार्थवाद । साहित्यकार समाज के यथार्थ को लेकर अपनी रचना का तानाबाना बुनता है । समाज के यथार्थ से अवगत करवाता हुआ अन्त में आदर्शवाद की ओर उन्मुख हो जाता है । पाठक को समाज की वास्तविकता से रूबरू करवा कर अन्त में उसके सामने आदर्श भी परन्तु करता है ताकि समाज में सकारात्मकता बनी रहे, यही, साहित्यकार का उद्देश्य भी है। यथार्थ मानव जगत के अवगुणों, कमजोरियों और बुराईयों को सामने लाता है तो आदर्शवाद सत्य, सद्गुणों आदि का आदर्श समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है । साहित्यकार अपने समय के यथार्थ को पाठकों के सामने रखता है, यथार्थ अर्थात् वास्तविकता, सत्य फिर चाहे वह सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक अथवा आर्थिक यथार्थ जो भी हो । साहित्यकार अपनी परिवेश का यथार्थ चित्रण अपने साहित्य में करता है परन्तु उसमें काल्पनिकता का रंग भरकर जो उसकी रचनाओं को सफल बनाने के लिए आवश्यक भी है ।

आधुनिक युग तकनीकी एवं वैज्ञानिक युग है । मानव की अधिकार सजगता ने उसके परिवेश, दशा, संस्कारों को बहुत अधिक प्रभावित किया है, आधुनिक युग में प्राचीन मूल्य, मान्यताएं बदल चुकी हैं । व्यक्ति का व्यवहार, रवैया, उसके जीवन मूल्य, रहन-सहन काफी बदल गया है, यह बदलाव साहित्य को प्रभावित किये बिना नहीं रहता । साहित्य में नव जीवन मूल्य, जीवन शैली, बिखराव आदि की अभिव्यक्ति होना ही साहित्य को यथार्थ से जोड़ता है ।

आधुनिक युग में 'प्रवासी' शब्द काफी प्रचलन में है परन्तु वास्तव में प्रवासी शब्द काफी समय से चला आ रहा है । प्रवासी शब्द का अर्थ है विदेश गमन, विदेश यात्रा अथवा घर पर न रहना अर्थात् जो अपने घर से दूर चला गया हो या रह रहा हो, वह प्रवासी है । प्रवासी अर्थात् प्रवास करने वाला यानि परदेश में रहने वाला । पुराने समय से ही मानव अपने रोजगार अथवा भ्रमण के लिए देश-विदेश में जाता या बसता रहता है, अर्थात प्रवासी शब्द पुराने समय से चलता

आ रहा है परन्तु आजकल जो प्रवासी शब्द प्रचलन में है उसका आशय काफी हद तक प्रवासी साहित्य अथवा प्रवासी लेखक से है । आज भारत से दूर विदेशों में रहने वाले भारतीयों की जनसंख्या लगभग दो करोड़ है, जिनमें व्यापारी, शिक्षक, डॉक्टर, इंजीनियर, शोधकर्ता, वकील, लेखक, प्रबन्धक, प्रशासक आदि शामिल हैं जिन्होंने विदेशों में रहते हुए वहाँ का नागरिकता प्राप्त कर अपनी पहचान बनाई है । ये प्रवासी जिस्म से भले ही भारत से दूर किसी दूसरे देश में बस गए हैं परन्तु उनका दिल हमेशा भारत के लिए ही धड़कता है क्योंकि कहा भी गया है -

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं
हृदय नहीं है वह पत्थर हैं, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।

यह उक्ति हर संवेदनशील मानव पर चरितार्थ होती है चाहे वह किसी भी पेशे से जुड़ा हो, विदेशी आसमान की बुलन्दियों पर उड़ता हो परन्तु उसकी जड़े तो अपने देश, अपनी मिट्टी से जुड़ी रहती हैं । साहित्यकार तो वैसे ही संवेदनशाल प्राणी होता है और प्रवास के दौरान वह अपनी मिट्टी, अपनी जड़ों से जुड़ी अनुभूतियों को अपनी लेखनी से व्यक्त करता है, अपने देश की स्मृतियों को संजोये रखने का सशक्त माध्यम उसके पास साहित्य है चाहे वह कोई भी विधा हो, कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास या कोई अन्य । उसकी हर विधा में कहीं न कहीं भारतीयता की झलक दिखाई पड़ती है । विदेशी पृष्ठभूमि होने पर पात्र भारतीयता के रंग में होगें अथवा विदेशी पात्र होने पर रचना की पृष्ठभूमि भारतीय होगी अर्थात् अपने देश की छाप उसकी रचनाओं में कहीं न कहीं, किसा न किसी रूप में अवश्य दिखाई देगी । हिन्दी साहित्य के विकास में प्रवासी लेखकों का योगदान भी कम नहीं है जो विदेशों में रहते हुए भी हिन्दी भाषा को एक नई दिशा प्रदान कर रहे हैं और हिन्दी भाषा को समृद्ध करने के लिए साहित्य की प्रत्येक विधा पर लेख रच रहे हैं । विदेशों में रहने वाले भारतीय लेखकों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है, प्रवासी भारतीय अपनी भाषा, संस्कृति के प्रति आसक्त हो विदेशों में भी उसकी अलख जगाये हुए हैं । आधुनिक समय में ब्रिटेन, लंदन, यू.के., कनाड़ा, मॉरिशस, अमेरिका आदि देशों में अनेक प्रवासी साहित्यकार हैं जो साहित्य की हर विधा में अपना उत्कृष्ट साहित्य रच रहे हैं । प्रवासी साहित्यकारों में तेजेन्द्र शर्मा, जकिया जुबैरी, अचला शर्मा, नीना पॉल, स्नेह ठाकुर, दिव्या माथुर, राजे सक्सेना, ऊषा वर्मा आदि अनेक नाम है जो हिन्दी साहित्यकारों में अग्रणी हैं । ये सभी लेखक नाटक, कहानी, उपन्यास, रेडियों, आदि सभी विधाओं पर विपुल साहित्य सृजन कर रहे हैं जिसके कारण प्रवासी हिन्दी साहित्य को मुख्यधारा साहित्य में स्थान मिलने लगा है । ब्रिटेन में ही सत्तर-अस्सी लेखक हिन्दी भाषा में अलग-अलग विधाआं पर लिख रहे हैं ।

समकालीन प्रवासी कथा साहित्य में तेजेन्द्र शर्मा एक चर्चित नाम है । मूल रूप से भारत के पंजाब के जगरांव शहर से जुड़े तेजेन्द्र शर्मा 1998 से लंदन प्रवासी हैं । दिल्ली से स्कूली पढ़ाई, दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए. अंग्रेजी एवं कम्प्यूटर में डिप्लोमा किया । उन्हें हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, पंजाब एवं गुजराती भाषाओं का ज्ञान हैं और कहानीकार, नाटककार, अभिनेता, कवि एवं लेखक के रूप में बहुख्याति प्राप्त हस्ती हैं । उनके द्वारा लिखा गया धारावाहिक 'शांति' अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त धारावाहिक है, साथ ही उन्होंने अन्नू कपूर निर्देशित फिल्म 'अभय' में नाना पाटेकर के साथ प्रमुख भूमिका निभाई है । तेजेन्द्र शर्मा जी इन्दु शर्मा मैमोरियल ट्रस्ट के संस्थापक एवं हिन्दी साहित्य के एकमात्र अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान इन्दु शर्मा अन्तर्राष्ट्रीय कथा सम्मान प्रदान करने वाली संस्था 'कथा य.के.' के सचिव हैं । उन्हें समय-समय पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाज़ा गया है जोकि उनकी लोकप्रियता का प्रमाण है । साहित्य लेखन के माध्यम से वे मुख्य प्रवासी साहित्यकारों में अभी भी सक्रिय योगदान दे रहे हैं ।

प्रसिद्ध लेखक असगर वजाहत के अनुसार - "तेजेन्द्र शर्मा विसंगतियों के शिल्पी हैं । उनकी कहानियां सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक विसंगतियों को जिस तरह सामने लाती हैं और जैसा वातावरण निर्मित करती हैं, वैसा कम ही देखा जाता है । दूसरी बात यह कि तेजेन्द्र बहुत सरलता और सहजता से गहराई में उतरते है और अपना सार्थक कमेंट करने के बाद जितनी सरलता से नीचे उतरे थे उतनी ही सरलता से ऊपर आ जाते हैं । वे केवल विमर्श के कहानीकार नहीं हैं । उनमें संवेदना का जो बहाव है वह पाठक को अपनी गिरफ्त में ले लेता है ।"[१]

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियां उनके सजग कहानीकार होने का प्रमाण है वे अपनी कहानियों के पात्रों को परिवेश में से चुन लेते हैं जो पन्नों पर उनकी लड़ाई लड़ते हैं । विषय वैविध्य और विषयों की समसामयिकता उनकी कहानियों की विशेषता है । आधुनिक यथार्थ, भौतिकवादी दृष्टिकोण, पारिवारिक बिखराव, संवेदनहीनता आदि को उन्होंने इस प्रकार अपनी कहानियों मे चित्रित किया है कि पाठक कहानी पढ़ते समय स्वयं को उसी परिवेश में पाता है जैसा कि कहानी में चित्रित होता है । आज के स्वार्थी, भौतिक युग में परिवेश और पात्रों का जैसा सजीव चित्रण तेजेन्द्र शर्मा ने किया है वह अद्वितीय है । उनकी कहानी 'देह की कीमत' मानवीय सम्बन्धों की पोल खोलती और स्वार्थ से बंधे रिश्तों को बेनकाब करती दास्तान हैं जिसमें दिखाया गया हैं कि विदेश जाने की चाहत आजकल के युवकों को कहाँ पहुँचा रही है फिर पीछे उनकी परिवार को क्या दशा है, उसका सजीव वर्णन है । बड़े शौंक से ब्याही गई पम्मी का पति हरदीप गैरकानूनी तरीके से जापान जाता है क्योंकि भारतीय युवाओं को विदेशी नौकरी, पैसे, चकाचौंध हमेशा आकर्षित करती है, परन्तु वहाँ वह क्या करते हैं, कैसा जीवन व्यतीत करते हैं, वे अपने परिवार को भनक भी नहीं लगने देते । कहानी में हरदीप ऐसे ही युवकों का प्रतिनिधित्व करता है और उसके जैसे असंख्य युवा आज हमारे देश में मौजूद हैं "फरीदाबाद का वैध नागरिक, खाते पीते घर का 'काका', जापान में अवैध काम करने को अभिशप्त था ।......... वहाँ वो कुली भी बन जाता था तो कभी रेस्टोरेंट में बर्तन भी मांज लेता था ... हर वो काम जो हरदीप अपने देश में किसी भी कीमत पर नहीं करता, जापान में सहर्ष कर लेता था ।... कारण? झूठी शान के अतिरिक्त, और क्या हो सकता है ... कि लड़का जापान में काम करता है ।"[पप] ठीक ऐसा ही वास्तविकता हमारे भारत के कई घरों की हैं परन्तु इस ऊंची शान के अतिरिक्त एक ओर यथार्थ भी है कि बहु से नाता केवल बेटे के कारण ही है या फिर किसी ओर स्वार्थ के कारण । जब हरदीप की जापान में मृत्यु हो जाती है तो बीजी का रुख अपनी लाडली बहु के प्रति कसा बदलता हे उसकी एक बानगी – "मैं तां पहले ही कहन्दी सी, कुड़ी मंगली है ।... ऐथे ब्याह नहीं करणा । ... मेरी तां कदी कोई सुणदा ही नहीं ।"... बीजी का विलाप जारी था ।"[पपप]

समाज में संवेदना किसी प्रकार खत्म होती जा रही है उसका यथार्थ चित्रण है कहानी में जा बीजी अभी तक अपनी बहु को कोस रही थी, अपने बेटे को याद कर रही थी, परन्तु ये पता चलने पर कि उनके बेटे की लाश भारत न भेजकर उसके लिए जमा किये पैसों को उसकी पत्नी के नाम कर दिया जाये तो बीजी को ये भी मंजूर नहीं । पति के डर से कुछ कह न पाने पर वे उसका दूसरा रास्ता खोजती हैं कि छोटे बेटे का विवाह पम्मी से कर दिया जाये ताकि घर का पैसा घर पर ही रह जाये । इस समाज की सच्चाई शायद पैसा ही हैं, क्योंकि अपने बेटे के चले जाने का गम बड़ा नहीं, छोटे बेटे की शादी विधवा से हो जाए इस बात का भी कोई मलाल नहां, परन्तु बेटे के नाम का पैसा बहु को न मिल जाये ये सबसे बड़ी समस्या है । केवल परिवार के मुखिया दारजी ही पम्मी के दुख को समझते हैं और साथ ही साथ अपने परिवार की संवेदनहीनता पर दुखी भी होते हैं – "दारजी अपने परिवार को देखकर हैरान थे, क्षुब्ध थे ... अपने ही पुत्र या भाई के कफ़न के पैसों की चाह इस परिवार को कहाँ तक गिरायेगी, उन्हें समझ नहीं आ रहा था । मन किया सब कुछ छोड़-छाड़कर संन्यास ले लें । पर अगर वे नहीं होंगे तो पम्मी का क्या होगा? ये गिद्ध तो सामुहिक भोज करने में जरा भी नहीं हिचकिचाएंगे ।"[पअ]

आधुनिक समाज में रिश्तों का यथार्थ क्या रह गया है यह तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'रिश्ते' में बखूबी देखने को मिलता है । परिवार के सदस्यों में प्रेम, सहयोग, समर्पण, समझदारी के स्थान पर स्वार्थ, परायापन, लालच किस प्रकार पनप रहा है 'रिश्ते' कहानी में उसका यथार्थ चित्रण है । आज के वातावरण में ज्यादातर रिश्ते पैसे, लालच और स्वार्थ पर टिके हैं चाहे वह रिश्ता सगे पिता-पुत्र अथवा भाई बहनों का ही क्यों न हो । कहानी में शिवनाथ बाबू को उनकी अपनी सगी बहनें किस प्रकार उन्हें सड़क पर ला खड़ा कर देती हैं तो फिर जीजा के साथ वे किस अपनेपन की उम्मीद कर सकते हैं । कहानी में दामाद का अपने ससुर और साले के प्रति रूखापन उतना नहीं खलता जितना कि दोनों बहनों और बेटियों का अपने पिता और भाई के प्रति किया गया धोखा । अपने लालची पतियों की बातों में आकर दोनों बहनें अपने बीमार पिता से तो मकान का सौदा करवा लेती हैं और भाई को बिना बताये सारा पैसा हड़प कर उसे घर से बाहर निकलवा देती हैं वो

भी वह भाई जिसने स्वयं विवाह न करके अपने बीमार पिता और अनब्याही बहनों की जिम्मेदारी को प्राथमिकता दी । "उनकी बहन ने जब उन्हें बेघर कर दिया था तब भी मेरे कन्धे पर सिर रखकर बच्चों की तरह रोये थे । उस दिन वह सचमुच टूट गये थे । इससे पहले भी अनेक बार सम्बन्धियों की तल्खी को उन्होंने अनुभव किया था । मां टी.बी. से मर गई, पिताजी कैंसर से पीड़ित रहें, निर्मला का पति उसे दहेज के लिए तंग करता था और ऐसे में आभा ने ऐसा वार किया उन पर ।"[अ] रिश्तों का यथार्थ ही शायद यही है कि कोई व्यक्ति रिश्तों के मायने समझकर अपना सर्वस्व लुटा देता है तो दूसरे स्वार्थवश अपनों का ही सब कुछ लूट लेते हैं यही दोनों पक्ष हमारे जीवन के चारों आर दिखाई पड़ते हैं । अपनी बेटियों की तरह परवरिश करने वाले और अपना सुख त्यागकर भाई बहन से प्यार करने वाले शिवनाथ बाबू को अपनी बहन आभा से सुनने को मिलता है – "भइये, तुम्हारी अपनी कोई संतान होती तो शायद तुम मेरा दर्द समझ पाते ।"[अप] और आभा का दुख भी क्या है कि वह पढ़ी लिखी होकर किसी दूसरी बिरादरी के कम पढ़े लिखे और मामूली मोटर मैकेनिक के साथ विवाह करना चाहती है और एक शुभचिन्तक होने के नाते भाई उसे समझाने की कोशिश करते हैं, यही रिश्तों का घोर यथार्थ है ।

साहित्य यथार्थ स सम्बद्ध रहता है, साहित्य की आधारशिला यथार्थ हैं और तेजेन्द्र शर्मा जी अपनी कहानियों में इस यथार्थ को उतारने में पूरी तरह सफल रहे हैं । 'काला सागर' कहानी घोर यथार्थ से ओत-प्रोत रचना है जिसमें आतंकवादियों द्वारा एक जहाज को काला सागर में गिरा दिया जाता है जिसके कारण असंख्य लोग मारे जाते हैं परन्तु इस दुर्घटना से भी बड़ा यथार्थ बाद में प्रस्तुत होता है जब अपनों के मृत शरीर को प्राप्त करने और दुख मानने की अपेक्षा पात्रों की संवेदनहीनता और स्वार्थ का सच सामने आता है । मृतकों के सम्बन्धियों को एक चार्टर विमान से लंदन भेजा जाता है ताकि वे अपनों की पहचान कर उनके मृत शरीर प्राप्त करें, परन्तु एयरलाइन के विमल महाजन को इस दौरान रिश्तों का एक अलग ही रूप देखने को मिलता है जोकि उनके लिए अकल्पनीय था । स्वार्थ और लालच ने पिता, पुत्र, मां, बेटी, अपने पराय सबको किस धरातल पर पटक दिया है, इस विमान दुर्घटना ने उस घोर यथार्थ की सच्ची तस्वीर दिखा दी – "मिस्टर महाजन .... मैं चाहता हूं कि अब भी मेरे बेटे और बहू की मृत्यु का मुआवजा मुझे ही मिले । इससे पहले कि मेरे पत्नी इसके लिए अर्जी दे, मैं आपके पास अपन क्लेम की यह अर्जी छोड़े जा रहा हूँ ताकि आप इन्साफ कर सकें । मैं तो अब बूढ़ा हो चला हूँ । कमाई का अब और कोई जरिया है नहीं ।"[अपप] मतलब व्यक्ति का स्वार्थ देखिये बेटे-बहू की मौत को भी लोग अपनी कमाई का जरिया बनाने से नहीं झिझकते । ऐसे एक-दो नहीं बल्कि विमान में मारे तीन सौ उनतीस लोगों में से आधे से ज्यादा के रिश्तेदारों का यही यथार्थ कहानी में सामने आया है – "जिस काम के लिए आए थे, वो तो हो गया । जरा बताएंगे, यदि शापिंग वगैरह करनी हो तो कहाँ सस्ती रहेगी? नए है न ...."[अपपप] सभी लोग मानों अपने सम्बन्धियों की मृत्यु को कैश करना चाहते हैं और ये मात्र तेजेन्द्र जी की कल्पना नहीं बल्कि हमारे जीवन का कड़वा यथार्थ हैं । रिश्तों में स्वार्थ का विष किस प्रकार पनप रहा है 'दंश' ऐसे ही रिश्तों की कहानी है । सगी मां की लाश पर खड़े होकर क्रिया कर्म से पहले बच्चां को सम्पत्ति के बंटवारे की चिन्ता हो जाती है । सब चाहते है कि पैसा मिल जाये, रिश्तों का क्या है वे तो आज हैं कल नहीं है परन्तु पैसा है तो जीवन है । अपने सगे भाईयों को भी नहीं छोड़ते, उनकी सम्पत्ति उनके मरने के बाद किसी पराये हाथों में न चली जाये इसके लिए कोई भी चाल-चलने से पीछे नहीं हटते – "कमला के यहाँ से प्रस्ताव आया : भैया, मेरे बेटे को गोद ले लो । बुढ़ापे का सहारा बन जायेगा । लुटेरों की एक और चाल । मेरी बची-खुची भविष्य-निधि पर भी निगाहें लगाये बैठे हैं ।"[पग]

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियां जीवनधर्मी हैं, जीवन के अनेक रूपों का यथार्थ वर्णन करती हैं । उनकी कहानियां बाह्य और यथार्थ के बीच पुल बनाती हैं । काल्पनिकता भी यथार्थ के धरातल पर ही दिखती हैं । 'ग्रीन कार्ड' कहानी नाम से ही स्पष्ट हो जाता है कि इसमें लेखक ने भारतीय समाज के किस यथार्थ का चित्रण किया होगा । विदेश जाना आज हर भारतीय नागरिक का स्वप्न है और उसके लिए वह किस कदर स्वार्थी या संवेदनहीन हो जाता है यह 'ग्रीन कार्ड' कहानी में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है । विदेश जाने के ग्रीन कार्ड हासिल करने की इच्छा व्यक्ति पर इस कदर हावी हो

जाती है कि भारतीय नागरिक होकर भी वह अपनी रीति-रिवाजों यहाँ तक कि विवाह जैसे पवित्र बन्धन का भी मजाक बना देता है, इसका यथार्थ चित्रण कहानी के पात्र 'अभय' के माध्यम से हुआ है । अभय में विदेश जाने की इच्छा इतनी ज्यादा है कि वे इसके लिए वह अपने से कम सुन्दर लड़की शारदा से शादी कर लेता है क्योंकि वह अमेरिका जाने वाली है और उसके लिए ग्रीन कार्ड है । नई नवेली पत्नी से प्यार होने की बजाय वह उसको अमेरिका जाने के लिए उकसाता है ताकि जल्दी से जल्दी उसका अपना सपना भी पूरा हो - "तुम अमेरिका अवश्य जाओ और ग्रीन कार्ड हासिल करने का प्रयत्न करो - अपने लिए भी और मेरे लिए भी ।" जब शारदा से उसे ज्यादा उम्मीद नजर नहीं आती तो वह एक सुन्दर और अमीर लड़की सुगन्धा की ओर आकर्षित हो जाता है क्योंकि वह अमीर और साधनसम्पन्न है । हमारे समाज में ऐसे कितने ही युवा मिलेंगे जिनकी सोच कहानी के पात्र अभय जैसी है जो लड़कियों या शादी को अपनी आवश्यकताएं पूरा करने का माध्यम मात्र समझते हैं ।

हमारे पुरूष प्रधान समाज का एक बहुत बड़ा सच है कि वह नारी को महज खिलौना मानता है । वह उसके माध्यम से अपने दूसरी जरूरतों को पूरा करना चाहता है जैसा कि 'ग्रीन कार्ड' कहानी का नायक अभय है, कभी वह उसे पाने के लिए अनुचित कार्यो का सहारा लेता है परन्तु हर बार उसकी इस ज्यादती का निशाना तो औरत ही बनती है । अगर वह प्यार या काबलियत के बल पर उसे प्राप्त नहीं कर पाता तो गलत कार्य करके हासिल कर लेता है यही नारी जाति के सच से पाठकों को परिचित करवाया है । विजय अपने कॉलेज में पढ़ने वाली लड़की सुलक्षणा को मन ही मन चाहता है परन्तु उसकी योग्यता के समक्ष अपने को हीन मानकर वह उसे कह तो नहीं पाता परन्तु अपने प्रेम को प्राप्त करने के लिए वह जो कुछ करता है उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती । वह सुलक्षणा की गहरी नींद का फायदा उठाकर उसके साथ बलात्कार करता है जिसका उसे पता नहीं चलता कि उसके साथ गलत कार्य करने वाला कौन था । इस घटना से सुलक्षणा बुरी तरह टूट जाती है तो विजय शुभचिन्तक बनकर हमदर्दी दिखाता है और इस सदमें से उबारने के लिए वह उससे शादी करने को तैयार हो जाता है और इस मतलबी दुनिया में विजय जैसे इन्सान को भगवान का दर्जा देती है - "क्षण भर के लिए समझ नहीं पाई कि यह एक इन्सान है या कोई देवता जो इस हालत में भी मुझे स्वीकार करने को तैयार है । कहाँ एक ओर पुलिस, प्रिंसिपल और अन्य सहपाठी थे, जिनके लिए मैं एक हास्य का विषय बन चुकी थी तो दूसरी ओर विजय ।"[ग] इस कहानी में समाज की एक बहुत बड़ी सच्चाई की ओर इंगित किया है कि अगर किसी लड़की के साथ बलात्कार होता है तो हर व्यक्ति चाहे वह अपना है या पराया लड़की को चुप रहने की ही सलाह देते हैं, गलत के विरूद्ध उठने के लिए कोई भी नहीं कहता जैसे कि इस कहानी में सभी सुलक्षणा को ऐसी ही सलाह देते हैं जैसे कि गलत कार्य के लिए वह खुद जिम्मेदार है ।

"दरअसल प्रवासी हिन्दी साहित्य भारत से बाहर के भारत का यथार्थ रूप है । यह साहित्य भारत के हिन्दी साहित्य और भारतेत्तर हिन्दी साहित्य और साहित्यकारों के बीच ही नहीं बल्कि भारत की संस्कृति और अन्य देशों की संस्कृति के अन्त:सम्बन्धों का सम्पूर्ण विश्लेषण हमारे सामने प्रस्तुत करता है ।"[गप] भारत से दूर जिस यथार्थ का लेखक भोगते हैं उसी का प्रतिबिम्ब उनकी कहानियों में झलकता है । प्रवास का दर्द या विदेशी चकाचौंध, आकर्षक मोटी कमाई, आलीशान रहन-सहन यही यथार्थ इन लेखकों की कहानियों में प्रतिबिम्बित होता है । आज की युवा पीढ़ी के जो विदेशों के प्रति आकर्षण हैं उसकी यथार्थ अभिव्यक्ति हैं कहानी 'ढिबरी टाइट' में और विदेशों की वास्तविकता क्या है लेखक ने इस कहानी के माध्यम से बड़ी मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति दी है । गुरमीत जिसका अच्छा भला घरबार है, जयदाद है और पसन्द की लड़की से विवाह हुआ परन्तु इन सबको ताक पर रख इच्छा है विदेश जाने की क्योंकि उसके सभी मित्र विदेश गए है, वहाँ की बड़ी-बड़ी कहानियां सुनाते हैं तो गुरमीत भी जिद करके कुवैत जाता है, जी तोड़ मेहनत करता है, पत्नी को भी ले आता है परन्तु बेगानी धरती बेगानी ही होती है यही यथार्थ है । एक तो बेगाना देश, बेगाने लोग, भाषा की दिक्कत, फिर पत्नी की डिलवरी होने वाली है वह थोड़ी तेज गाड़ी चलाकर घर जल्दी पहुँचने की कोशिश करता है तो पुलिस पकड़ लेती है और लाख समझाने पर भी उसे जेल में डाल देती है क्योंकि भाषा अलग होने की वजह से वह अपनी समस्या

उनको समझा नहीं पाता, दूसरी तरह बेगाने देश में उसकी पत्नी अकेली बच्चे को जन्म दे देती है परन्तु मदद् के अभाव में दम तोड़ देती है, नवजात बच्चा भी मर जाता है और उनकी बेटी मां की हालत देख-देखकर इधर-उधर बन्द घर में भूख से जान दे देती है । गुरमीत को जब तक पुलिस छोड़ती और वह घर पहुँचा तब तक उसकी दुनिया ही उजड़ चुकी थी जिसका उसके दिलो-दिमाग पर ऐसा प्रभाव पड़ा उसने हंसना-बोलना ही बन्द कर दिया, गुमसुम सा अपने परिवार में लौट आया - “विदेश में अकेले पड़ जाने का खौफ गुरमीत की आंखों में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था । सात समुद्र पार करके विदेश जाने वाली ललक थी गुरमीत में । पर एक ही समुद्र के उस पार पहुँच कर उसका दिल दहल गया था ।”[गपप]

इस प्रकार तेजेन्द्र शर्मा की कहानियां जीवन के, समाज के, वीभत्स, कुरूप एवं वास्तविक यथार्थ के दर्शन कराती हैं । समाज में समाप्त होती सवेदनशीलता, स्नेह, गौरव का बखूबी चित्रण कहानियों में हुआ है । नारी जीवन की त्रासदी, विदेशी चकाचौंध, रिश्तों का खोखलापन, नारी सम्मान का सूक्ष्मता से चित्रण किया गया है जिसकी सजीव झांकी हमें अपने आसपास के समाज में बखूबी दिखाई पड़ती है । यही एक सच्चे कलाकार की सफलता है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सीधी रेखा की परतें, तेजेन्द्र शर्मा, आवरण पृष्ठ
2. सीधी रेखा की परते, तेजेन्द्र शर्मा, पृ. सं. 14
3. वही पृ. सं. 11
4. वही पृ. सं. 18
5. वही पृ. सं. 226
6. वही पृ. सं. 226
7. वही पृ. सं. 273
8. वही पृ. सं. 275
9. वही पृ. सं. 255
10. वही पृ. सं. 175
11. प्रवासी हिन्दी कहानी एक अन्तर्यात्रा, संपादक डॉ. सुषमा आर्य, डॉ. अजय नावरिया, पृ. स. 86
12. सीधी रेखा की परतें, तेजेन्द्र शर्मा, पृ. सं. 120